ॐ कलियुगकी लीला ॐ

धनि कलियुग आपने लीला अजब दीखाई है।
उलटा चलन चला दुनियांमें सबकी मति बौराई है॥
नीति पंथ उठ गया कचहरी पापन आन लगाई है।
धर्म गया पाताल सभीके मन बेधर्मी छाई है॥
गुप्त हुए सच्चे वकील झूठों की बात सवाई है।
सच्चों की परतीति नहीं झूठों ने सनद बनाई है॥
न्याय छोड़ अन्याय करैं राजोंने नीति गँवाई है।
हकदारों का हक्क मेट बेहक पर कलम उठाई है॥
जो हैं जाली फरेबवाले उनकी ही बनी आई है।
उलटा चलनचला दुनियांमें सबकी मति बौराई है॥ १॥
गूजर जाट बने सन्यासी पोथी बगल दबाई है।
मूड़ मुड़ाकर एक धेलेमें कफनी लाल रंगाई है॥
पंथ चले लाखों पाखण्डी अद्‌भुत कथा बनाई है।
मुँह काला कर दिया किसीने सिर पर जटा रखाई है॥
हुए नीच कुरसी नसीन ऊँचोंको नही तिपाई है।
जुगुनू पहुँचे आसमान पर जाकर दुम चमकाई है॥
फाँके करते संत मिलै भडुओंको दूध मलाई है।
उलटा चलनचला दुनियांमें सबकी मति बौराई है॥ २॥
सास बहू से लड़ै बहू भी आँख फेर झुँझलाई है।
लेकर मूसल हाथ कोसती दाँत पीस उठ धाई है॥
घरवालेको छोड़ गैर कर कुलकी लाज गँवाई है।
निज पतिकी सेवा तज कर परपति प्रीत लगाई है॥
पुरुष हुए ऐसे व्यभिचारी विषयवासना छाई है।
वेश्याओं के फन्दे में पड़ घरकी तजी लुगाई है॥
मात पिताकी करै बुराई नारी परम सुखदाई है।
उलटा चलनचला दुनियांमें सबकी मति बौराई है॥ ३॥
ब्याह बुढ़ापे में जो करते उन पर गजब खुदाई है।
साठ बरसके आप करी कन्या के संग सगाई है॥
कुछ दिन पीछे आप मरगये करके रांड बिठाई है।
लगी करन व्यभिचार लाजतजि घरघर लोग हँसाई है॥
पाधा पंडित करैं दलाली मंत्री जिनका भाई है।
शर्म रही नहिं बेशर्मोको बेटी बेचकर खाई है॥
बहन भानजी त्यागन करके साली न्योति जिमाई है।
उलटा चलनचला दुनियांमें सबकीमति बौराई है॥ ४॥
गंगाजल गोरस को छोड़कर गाड़ी भांग छनाई है।
भक्ष्य अभक्ष्य लगे खाने मदिराकी होती छकाई है॥
श्वसुर बहू को कुदृष्टि देखै अपनी नियति डुलाई है।
ठट्ठा अरु मसखरी करै सासूसे ज्वान जमाई है॥
कहै भतीजा चचासे अपने तू मूरख सौदाई है।
हमें चैन करनेसे मतलब किसकी चाची ताई है॥
बहिन बहिनसे लड़ै और लड़ता भाईसे भाई है।
उलटा चलनचला दुनियांमें सबकी मति बौराई है॥ ५॥
जामा अङ्गा दिया त्याग अरु पगड़ी फारि बहाई है।
पहन कोट पतलून शीशपर टोपी गोल जमाई है॥
तोड़ तख्त अरु सिघासनको लाके बेंच बिछाई है।
खीर खाँडको त्यागन करके रोटी डबल पकाई है॥
तोड़के ठाकुरद्वारा मसजिद सबकी करी सफाई है।
दूसरी जगह जाकर करके दूसरोकी करी बड़ाई है ॥
बात करै सब दूसरी भाषा में निज भाषा बिसराई है।
उलटा चलनचला दुनियांमें सबकीमति बौराई है॥ ६॥
मित्र शत्रुसम हुए प्रीतिकी डालि तोड़ जलाई है।
विद्या बिन हो गये विप्र गायत्री तलक भुलाई है॥
क्षत्रिय बैठे नारी बनकर ले तलवार छिपाई है।
बन आईना कुछ बनियोंसे माया मुफ्त लुटाई है॥

शूद्र हुए धनवान ब्राह्मणोंने कीन्हीं स्योकाई है।
गयाबाल और मथुरा के चौबोंकी बात बनी आई है॥
चरों युगोंसे कलिने अपनी नईरीति दिखलाई है।
उलटा चलनचला दुनियांमें सबकीमति बौराई है॥ ७॥
अपूज पूजने लगे कहैं सब शिर पर देवी आई है।
घर घरमें गुलगुले शेख सद्दोकी चढ़ी कढ़ाई है॥
परब्रह्म को छोड़ भूत प्रेतोंकी दई दुहाई है।
मूंड हिलाती कही मलिनि या कहैं कुसुम्भी माई है॥
बालभोग ठाकुरको नहिं सय्यदके लिये मिठाई है।
संताके कम्बल नहीं पतुरियाको कुरती सिलवाई है॥
गुरू हरै चेलोंका धन चेला करता चतुराई है।
उलटा चलनचला दुनियांमें सबकी मति बौराई है॥ ८॥
विधवा लग गई पान चबाने दे सुरमा मुसुकाई है।
नित करती क्षृंगार देखकर अहिवाती शरमाई है॥
बैठे ज्वारी और अगामी हुआ जगत अन्यायी है।
सब लक्षण विपरीत और घर घरमें होत लड़ाई है॥
गाय जाए लाखों मारी करता नहीं कोई सुनाई है।
इसीसे पड़ता काल सृष्टिमें संपति सकल बिलाई है॥
हो दयाल हे नाथ आज कलयुगकी महिमा गाई है।
उलटा चलनचला दुनियांमें सबकी मति बौराई है॥ ९॥

श्रीमद्भागवत द्वादश स्कंधपर श्रीयुत शालिग्रामवैश्यकृत भाषाटीका से उद्धृत।